करवा चौथ की कथा

करवा चौथ की कथा

बहुत समय पहले की बात है, एक साहूकार केसात बेटे और एक प्यारी बहन थी। इन सात ोंभाइय ोंने अपनी बहन क बहुत प्यार से रखा और हमेशा यह सुननित नकया नक वे खुद खाना खाने से पहले उनकी बहन खाना खाए। धीरे – धीरे समय बीतता गया और उनकी बहन की शादी ह गयी, एक नदन जब उनकी बहन ससुराल से मायकेआई. भाइय ोंने नदन का अपना कार बार ख़त्म कर शाम क घर आये त उन्हें अपनी बहन कुछ परेशान नदखी। निर वे सभी रात क खाना खाने केनलए इकट्ठे हुए, भाइय ोंने अपनी बहन से खाने का आग्रह नकया, लेनकन उसने बताया नक वह करवा चौथ (Karva Chauth) का ननजला व्रत रख रही है और केवल चोंद्रमा क देखने और उसे अर्घ्ज देने केबाद ही अपना व्रत त ड़ सकती है। अभी चोंद्रमा नहीं ननकला है, इसनलए वह भूखी-प्यासी थी।

यह सुनकर सबसे छ टे भाई ने अपनी बहन की दुदजशा देखकर एक दीपक नलया और उसे कुछ दूरी पर एक पीपल केपेड़ केनीचे चलनी की ओट में रख नदया। दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत ह ता था मान चतुथी का चोंद्रमा उनदत ह रहा ह , निर उसने अपनी बहन क बताया की चोंद्रमा नदखाई दे रहा है, नजसे देखकर तुम अपना उपवास त ड़ सकती ह । बहन बहुत खुश ह कर, घर की सीनिय ोंपर चि गई और निर चोंद्रमा क अर्घ्ज देकर अपना भ जन शुरू नकया।

जैसे ही उसने अपना पहला ननवाला खाया, उसे छींक आ गई; दूसरे ननवाला खाने पर उसे एक बाल नमला और निर तीसरा ननवाला खाने ही वाली थी की उसे अपने पनत केननधन की खबर नमली, नजससे वह गहरे सदमे में आकर टूट गई।

उसकी भाभी ने इस दुभाजग्यपूर्ज घटना केपीछे की सच्चाई का खुलासा करते हुए बताया नक तुम्हारे द्वारा करवा चौथ (Karva Chauth) का व्रत अनुनचत तरीकेसे त ड़ने से देवता नाराज ह गए थे। सच्चाई जानने केबाद करवा ने प्रनतज्ञा की नक वह अपने पनत का दाह सोंस्कार नहीं ह ने देगी जब तक की उसका पनत पुनजीनवत न ह जाये, वह पूरे एक वर्ज तक अपने पनत केसाथ रही, उसकी देखभाल की और उसकेशरीर पर उगने वाली सुई जैसे घास क इकट्ठा नकया।

एक साल बाद, करवा चौथ (Karva Chauth) निर आया और उसकी सभी भानभय ोंने व्रत रखा। जैसे ही उसकेभानभयाँ आशीवाजद लेने उसकेपास आती है, उसने प्रत्येक भानभय से एक सुई देकर अपने पनत क पुनजीनवत कर देने और मुझे वापस सुहागन बना द ऐसा अनुर ध करती, उसकी भानभय ोंने अगले आने वाली भानभय से ऐसा कहने क कहा, अोंततः जब छठी भाभी आई और करवा ने वही बात उनकेसामने द हराई त छठी भाभी ने बताया नक तुम्हारा यह काम तुम्हारी सबसे छ टे भाई की पत्नी ही कर सकती है, उसी केपास तुम्हारे पनत क वापस जीनवत करने की शक्ति है, क्ोंनक तुम्हारे सबसे छ टे द्वारा नकये गए कायज केकारर् आपका व्रत टूट गया था। भाभी ने करवा क ननदेश नदया नक वह उसे कसकर पकड़ ले और जब तक उसका पनत पुनजीनवत न ह जाए, उसे न छ ड़े और निर वह वह से चली गई।

अोंत में जब सबसे छ टी भाभी आई त करवा ने उससे भी यही ननवेदन नकया। यह देखकर भाभी नझझकने लगी और यह देखकर करवा ने उसे ज र से पकड़ नलया और नजद करने लगी नक वह उसके पनत क पुनजीनवत कर दे। करवा की पकड़ इतनी मजबूत थी की लाख क नशस केबाद भी भाभी उसकेपकड़ से छूट नहीं पायी, अोंततः वह ननराश ह गई और उसने अपनी छ टी उोंगली काट दी और उसमें से अमृत ननकालकर अपने पनत केमुँह में डाल नदया, उसकेतुरोंत बाद करवा का पनत श्री गर्ेश-श्री गर्ेश का जाप करता हुआ जाग गया। भगवान की कृपा से, अपनी सबसे छ टी भाभी केहस्तक्षेप के कारर् करवा क अपने पनत से निर से नमल जाते है।